अपनी दुनिया

अंक जुलाई १७ हम बच्चों का अपना अखबार (सीमित वितरण के लिए) अनियमित प्रकाशन

खास रिपोर्ट

शौचालय है बंद! और गंदगी खुले में!!

स्वच्छ भारत अभियान पर किसी का यह व्यंग शायद सटीक बैठता है। इस अभियान में गाँधी जी के चश्मे को स्वच्छ भारत का प्रतीक बनाया गया है जिसके एक शीशे में स्वच्छ तो दूसरे में भारत लिखा है। अर्थात स्वच्छता और भारत अलग-अलग है,जहां मूल भारत है वहां स्वच्छता नहीं है और जहां स्वच्छता है वहां भारत नहीं है। यह हकीकत हमें अपने आसपास दिखाई दे रही है। तमाम प्रयासों के बाद भी बीते कई वर्शों से हम अपने देश, प्रदेश, गॉव व कस्बों को स्वच्छ नहीं कर पाए हैं। अपने नजदीकी नगर अल्मोड़ा को ही ले लें। छोटा सा यह पर्वतीय नगर आज गंदगी और अव्यवस्थाओं का किस प्रकार शिकार है, उससे देश के अन्य कस्बों, नगरों की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। यहां नगर में अधिकांश लोग खुले में शौच नहीं करते लेकिन बाजारें पशुओं के मल से गंदी रहती है। नगर में कूड़ा कनकट पालिका द्वारा एकत्र तो किया जाता है लेकिन उसे भी पालिका कहां डाले कोई व्यवस्था नहीं है। कूड़ादान, शौचालयों से बदबू की गंध और उनमें गंदगी और खुले में बहता जीवन पूरे नगर की आबो हवा को प्रदूशित ही नहीं कर रहा है इस नगर की सांस्कृतिक पहचान को भी धूमिल कर रहा है। आजादी से पूर्व की गठित नगरपालिका सदैव संसाधनों की कमी से जूझती रहती है। स्वच्छ भारत अभियान में भी पालिका को 20 लाख की धनराशि अब तक मिली है। यह कूड़ा फेंकने के वाहन आदि संसाधनों को जुटाने में ही खर्च होनी है। नगर में वर्षों से जीवन की निकासी की कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है जबकि नगर में अब तक दो जीवन ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित हो जाने थे। जीवन की समुचित निकासी न होने के कारण घरों, होटलों आदि से निकलने वाला मल बरसात के साथ पूरे नगर को गंदा करता है और जल जनित बीमारियों का कारण बनता है। नगर में नौलों धारों में भी मल संदूशण की गंदगी मिलने से पूरा पानी दूषित हो चुका है। 1864 में बनी इस पुरानी पालिका का आज तक विस्तार नहीं हो पाया। 1954 से आज तक इसके विकास की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा सके। वर्तमान में पालिका नगर की लगभग 40 हजार से अधिक आबादी का दबाव झेल रही है। लगभग 7.4 किमी में फैले पालिका क्षेत्र में ही प्रतिदिन 4 टन से अधिक कूड़ा कचरा एकत्र होता है। पालिका को अजैविक कचरे को ही एकत्र करने के लिए 5 हेक्टेअर की भूमि चाहिए लेकिन अब तक उसे मात्र 0.9 हेक्टेअर भूमि उपलब्ध हो पाई है। न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद बीते कुछ समय से पालिका ने कूड़े को पहाड़ी पर डालकर जलाना बंद किया है। नगर में प्लास्टिक सरीखे कचरे के निपटान की कोई व्यवस्था नहीं है। पॉलीथीन आदि के प्रयोग पर प्रशासन की ओर से समय समय पर प्रतिबंध के प्रयास भी किए गए हैं लेकिन पैकिंग का अधिकांश सामान प्लास्टिक व पॉलीथीन आदि के बेरोकटोक आने से एकत्र होने वाले कचरे में कोई अंतर नहीं आ रहा है। पर्वतीय जनपदों में कहीं भी ठोस कूड़ा प्रबंधन की व्यवस्था न होने से नदी नालों, गाड़ गधेरों में यह पलास्टिक कचरा एकत्र होता है अथवा जलाने की प्रवृत्ति देखी जाती है।

इनमें सफाई एक बड़ी चुनौती है। अल्मोड़ा ही नहीं निकवर्ती कोसी कस्बे की गंदगी को कोसी नदी अपने ऊपर लेने को बाध्य है जबकि कोसी से ही अल्मोड़ा नगर को पानी की सप्लाई होती है। आगे बड़े तो रानीखेत गोल्फ मैदान के पास बदबू का ढेर, रानीखेत का पूरा कूड़ा कचरा वहां मैदान में एकत्र होता है। चील, कौवे, कुत्तों का मेला बता देता है कि रानीखेत आबादी है। द्वाराहाट को निकलिए तो पान के पास कचरे का ढेर और उसपर बैठी चीलें। चौखुटिया क्षेत्र में सारा कूड़ा कचरा रामगंगा नदी में समा जाता है। दवाओं का कचरा हो या मरे जानवर, प्लास्टिक कचरा हो या होटलों की गंदगी सभी इस नदी में बहा दी जाती है। है। हम सभी जानते हैं कि स्वच्छता स्वस्थ्य मानव समाज के लिए अत्यंत आव यक है। गंदा वातावरण, खान पान और रहन सहन

अपनी बात

साथियो,

आधुनिक विकास से ऊपजी हमारी जीवन पद्धति हमारे लिए नई समस्यायें और चुनौतियां लेकर आई है। धरती पर दिनों–दिन बढ़ता कचरा, उसका प्रबंधन आज के युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। आज औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी क्रांति के युग में बढ़ते कचरे का सही तरीके से निपटारा करना एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। एक अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में सालाना दो खरब टन से ज्यादा कूड़ा पैदा हो रहा है। इस कूड़े में घरेलू, जैविक/अजैविक कचरा, औद्योगिक एवं व्यवसायिक कचरा, अस्पतालों से पैदा होने वाला कचरा एवं दिनों दिन बढ़ता ई कचरा भी शामिल है। अमेरिका दुनियॉ का सबसे ज्यादा कचरा पैदा करने वाला देश माना जाता है। विश्व में पैदा होने वाले कचरे का 30 प्रतिशत हिस्सा अमेरिका में पैदा होता है। तेजी से विकसित हो रहे चीन के बारे में अनुमान है कि वर्ष 2030 तक वह सालाना लगभग पॉच सौ तिरेपन मिलियन टन कूड़ा पैदा कर रहा होगा। इस तथ्य से हम इस स्थिति का गंभीरता से ऑकलन कर सकते हैं। दुनियां में जहां अन्य प्रकार से कचरा उत्पादन चरम पर पहुंच गया है वहीं आज भी मानव मल का 80 प्रतिशत हिस्सा नदियों से होकर समुद्र में पहुंच रहा है। यही हाल औद्योगिक रासायनिक कचरे व कूड़े का है जो नदियों से होकर समुद्र तक पहुंचकर पानी को प्रदूषित कर रहा है। हमारे देश की बात करें तो स्वच्छता चाहे वह व्यक्तिगत हो/सामुहिक/सामुदायिक सभी में हम पीछे हैं। हमारे देश का हर भाग चाहे गॉव हो या नगर गंदगी की समस्या से जूझ रहा है। लोग पानी, हवा व खाने पीने के सामान में प्रदूषण के कारण बीमारियों से जूझ रहे हैं। बापू ने भी स्वच्छता को आजादी के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण काम बताया था। सभी जानते हैं कि व्यक्तिगत स्वच्छता से 80 प्रतिशत बीमारियों से बचा जा सकता है। हमारे देश में सरकारें समय समय पर राष्ट्रीय स्तर पर अभियान व कार्यक्रम चलाकर देश को स्वच्छ करने का प्रयास करती रही है लेकिन चुनौतियां कम नहीं हुई है। दुनिया में कचरे के प्रबंधन में पुर्नचक्रण (Recycling) भी एक कारगर प्रणाली है, जिससे हम कचरे से होने वाले नुकसानों को थोड़ा बहुत नियंत्रित कर सकते हैं। जापान जैसे देश ने इस दिशा में कदम भी उठाए हैं, जो अपने देश के 65 प्रतिशत से अधिक कचरे को पुर्नचक्रण (Recycling) कर लेता है। समय की आवश्यकता है कि इस विषय पर हर नागरिक जागरूक हो और कूड़ा निस्तारण की व्यवस्थायें वैज्ञानिक प्रणाली पर आधारित हो। न्यूनतम कूड़ा पैदा करना, कूड़े का पुर्नचक्रण एवं चीजों का पुर्नउपयोग कूड़े की समस्या को कम करने में कारगर सिद्व हो सकता है। आज हम देखते है कि भारत का मेघालय राज्य जो कभी सिर्फ चेरापूंजी में सर्वाधिक बारिश के कारण ज्यादा जाना जाता था। आज अपने प्रांत के एक छोटे से गॉव मावल्यांग में लोगों द्वारा की जाने वाली सफाई व कचरा प्रबंधन के लिए पूरी दुनियॉ में पहचाना जा रहा है, जो कूड़े की समस्या के प्रबंधन के लिए एक नई राह दिखा रहा है।

हमारे देश में स्वच्छता को लेकर व्यक्तिगत व सामूहिक चेतना विकसित करने के साथ सरकारों को और जवाबदेही के साथ काम करना होगा। शायद तभी नई पीढ़ी स्वच्छ वातावरण में जीने योग्य बनेगी।

समाज को बीमार करता है और इससे अनेक बीमारियां पैदा होती है तथा देश की उत्पादकता और विकास दोनों प्रभावित होते हैं। भारत भी बीते कई सालों से गंदगी की समस्या से जूझ रहा है। नगरों में फैला प्रदूशण और कूड़ा कचरा देश को बीमार कर रहा है। खराब वातावरण और प्रदूशण और सफाई के अभाव में हमारे देश में प्रतिवर्श करोड़ों लोग बीमार होते हैं और लाखों लोग मौत के मुंह में जाते हैं। इसमें बच्चे, बुजुर्ग और महिलाओं की संख्या अत्यधिक है। सफाई के अभाव में यह बीमारी अन्य लोगों को भी फैलती है और अनेकों बार यह गंदगी हमारे जल व भोजन चक्र में फैलती जाती है। डायरिया, टाइफाइड, पीलिया, जैसी अनेक जानलेवा बीमारियों से लोगों की जान जाना और इन बीमारियों से लड़ने के लिए उनके संघर्श की घटनाएं आए दिन हमारे सामने आती है।

वर्तमान में देश में 'स्वच्छ भारत अभियान' चर्चाओं में है। देश को स्वच्छ व निर्मल बनाने के लिए संचार माध्यमों से खूब प्रचार प्रसार भी हो रहा है। गॉव हो या शहर हर स्थान पर लोगों से सफाई के लिए अपील की जा रही है। इसमें घर -घर में शौचालय बनाने और खुले में शौच न करने, हाथों की सफाई करने जैसे संदेश प्रमुख है। फिल्म हो या खेल जगत की हस्तियां टीवी पर इसके लिए खूब प्रचार प्रसार भी कर रहे हैं। स्कूल कालेजों में भी इस अभियान की चर्चा बच्चे खूब सुनते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2015 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 40 प्रतिशत लोगों के पास ही अच्छे शौचालय है। हमें ध्यान होगा कि भारत में स्वच्छता को लेकर आजादी के बाद से ही अनेक अभियान और कार्यक्रम चलाए गए। इसमें 1986 में केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम संचालित किया गया जिसमें महिलाओं को स्वाच्छ परिवेश व शौचालयों की सुविधा देने की बात कही गई थी। वहीं 1999 में देश में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान चलाया गया। 2003 में देश में निर्मल ग्राम पुरस्कार चलाया गया और गॉवों को मल से 100 प्रतिशत मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया। देश में हजारों गॉवों को इसके तहत पुरस्कृत भी किया गया। 2012 में पुनः इस अभियान को जन भागीदारी से चलाने का लक्ष्य रखा गया जिसमें ठोस व द्रव दोनों प्रकार के कचरे के निस्तारण की बात कही गई। वर्तमान मे 2014 से स्वच्छ भारत अभियान का हम हिस्सा हैं। भारत मानव मल की बड़ी समस्या से आज भी जूझ रहा है। बीते सालों की रिपोर्ट बताती है कि भारत में 15 करोड़ से अधिक लोग आज भी खुले में शौच जाते हैं। इसमें शहरी लोगों की संख्या अधिक है। सफाई और जल उपलब्धता के मामले में भारत का स्थान आज भी विश्व के देशों के बीच 93 वां है। विश्व बैंक ने भारत को इस अभियान को चलाने के लिए 15 अरब डॉलर का लोन भी देने का वायदा किया लेकिन अभियान के सही ढंग से न चल पाने के कारण अभी उसकी पहली किश्त जारी नहीं की। वहीं कचरे की बात करें तो भारत में जहां 2009 में 62 लाख टन कचरा एकत्र होता था 2015 में यह बढ़कर 78 लाख टन पहुंच गया है।

हम अपने आसपास भी लगातार गंदगी के परिवेश से जूझ रहे हैं। आए दिन सुनने में आता है कि पानी की गंदगी से अथवा खाने की गंदगी से इतने लोग बीमार हुए। मल संदूषण और उसके पानी में मिल जाने से अत्यधिक बीमारियों का फैलाव हो रहा है। नगर हों या कस्बे सभी स्थानों पर अथवा अपने गॉव घरों में हम कूड़े कचरे की समस्या से जूझने लगे हैं। देश में बीते दो तीन दशकों से जो भी सफाई अभियान चले उनमें कभी भी इस प्रकार की नीतियां सामने नहीं आई कि उसका प्रभाव हमारे गॉव कस्बों तक पहुंचे। आज हम अपने गॉवों, शहरों में बदल रहे कस्बों को देखें तो वे कूड़े कचरे के डस्टबिन बनते जा रहे हैं। हमारे आसपास के चारे के मैदान, गधेरे, नदियां सभी कूड़े कचरे से पटने लगी है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियान में इस गंदगी को भी गंभीरता से देखने की जरूरत है। गॉव व कस्बों में कूड़ा निस्तारण की क्या व्यवस्था होगी। यहां कूड़े कचरे और अन्य प्रकार की गंदगी के निस्तारण की ठोस नीति क्या बने यह सोचने का विषय है। हम अपने आसपास के नगरों व कस्बों को देखें तो वहां हजारों हजार लोगों के लिए जहां शौचालय की व्यवस्था नहीं है वहीं नगरों के कूड़े हो या सीवर की गंदगी सभी के निस्तारण की कोई व्यवस्था नहीं है। जबकि स्वच्छ भारत अभियान का आधा समय निकल चुका है और आधे से अधिक धन खर्च हो चुका है। ऐसे में देश को स्वच्छ करने के हमारे अभियान पर फिर से प्रश्न चिन्ह लग जाते हैं।

कहानी – नई उम्मीद

रखोली गॉव का दीवान ऐसे गॉव में रहता था जो आत्मनिर्भर और खुशहाल माना जाता था। इस पहाड़ी गॉव में अधिकांश लोग खेती बाड़ी से अपनी गुजर बसर कर लेते थे। कुछ लोग पास के कस्बे सीमागढ़ में छोटा मोटा काम आजीविका कमाते थे। अधिक दक्ष लोग काम लिए शहर की ओर निकल जाते थे। गॉव का जंगल मिश्रित था, चौड़ी पत्ती के वृक्ष जैसे बॉज, उतीस, क्वैईराल, सानण, के साथ इस जंगल में चीड़ के वृक्ष भी अधिक थे। पास के कस्बे में लोहे व सुनार का काम करने वाले लोग चीड़ की खाल बगेठ को खरीदते थे। यह भी अवश्यकता अनुसार बिकता था और मांग कम आती थी। यह जंगल गॉव के लिए बड़ा आसरा था। गॉव के लोग पानी, चारे, मकान की लकड़ी, चूल्हा जलाने की लकड़ी, पशुओं के लिए मौसमी चारे आदि के लिए इसी वन पर निर्भर थे। इसके साथ ही अलग अलग मौसम में जड़ी बूटी खोदना, झूला निकालना, आदि का काम करके भी अनेक ग्रामीणों की आय हो जाती थी।दीवान पास की छोटी बाज़ार में बगेठ (चीड़ की खाल) बेचकर अपने गॉव की ओर लौट रहा था। गर्मी के दिन थे, और रास्त चढ़ाई भरा। गर्मी और पसीने के कारण दीवान का बुरा हाल था। दीवान सोच रहा था कि एक बार और बगेठ बेचकर आएगा तो उतने पैसे मिल जाएंगे जितने की आज उसे आवश्यकता है। दीवान कस्बे से बगेठ बेचकर थका घर पहुंचा। थोड़ा आराम लेने के बाद वह फिर से रस्सी और कुल्हाड़ी लेकर फिर से जंगल की ओर रवाना हो गया।

सुनसान जंगल में गिरा हुआ पिरूल उसे चढ़ने में परेशानी कर रहा था। जंगल की ठण्डी हवा उसे राहत दे रही थी। थकान देखकर उसका मन लौट जाने को कर रहा था लेकिन स्कूल खुलने पर बच्चों के आने वाले खर्च को याद कर वह बगेठ निकलाने में जुट गया। तभी उसे जंगल में धुंए की गंध आई। तेज हवाओं के साथ जंगल में आग फैलने लगी। चीड़ के जंगल में गिरे पिरूल से आग लपटों में घिर गया। पेड़ों से पक्षी चिल्लाकर भागने लगे। दीवान घबरा गया उसकी समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे। उसका मन किया कि गॉव वालों को भोर कर बुलाए। लेकिन गॉव से दूर उसकी आवाज का गॉव पहुचना संभव नहीं था। जंगल में धुंआ देख ग्रामीण जंगल की ओर भागे। तभी उन्हें दीवान की आवाज सुनाई दी। सभी ग्रामीण दीवान की ओर दौड़े। सभी ने घंटो मशक्कत कर जंगल की आग बुझाने का प्रयास किया। कितने ही ग्रामीणों को हाथ पैर भी झुलसे लेकिन वे आग पर नियंत्रण नहीं कर पाए। आग पूरे जंगल में फैल चुकी थी। ग्रामीणों में इस बात पर बड़ा गुस्सा था कि किस आदमी ने जंगल में आग लगाई और वे इसे नहीं बुझा पाए। ग्रामीणों का अनुमान था कि संभवतः खेतों से होते हुए यह आग उनके जंगल तक पहुंची। ग्रामीण शोर शराबा करने लगे तभी गॉव के कुछ बड़ों ने उन्हें समझाया कि अब जो गलती हो गई उसे भूलकर आगे जंगल को बचाना है। उन्होंने ग्रामीणों को कुछ तरकीबें भी बताई।

इस बात से दीवान सिंह को उम्मीद जगी और उसे लगा कि इस गलती की हम भरपाई कर सकते हैं। इसके बाद अगली बरसात में ग्रामीण फिर से जुट गए। जंगल में जले हुए पेड़ों को हटाया गया और उनके स्थान पर नए पेड़ लगाए गए। जंगल में स्थान स्थानों पर पानी को रोकने के लिए लाईनें खोदी गई और जंगल में घास और अन्य पौधे उगने लगे। अगले वर्श आग से निपटने के लिए ग्रामीणों ने फायर लाईन भी खोदी और हर घर में जाकर जंगल में आग न लगाने की अपील की। दीवान के परिवार को जीवन देने वाला जंगल आज फिर से हरा भरा हो चुका है। बीते 16 सालों से इस जंगल में अब कोई आग नहीं लगी है।

पिंकी, हर्षिता, राहुल (संयुक्त कहानी), बाल संगठन दौलाघट

करीपत्ता एक बहुउपयोगी पेड़

मेरी कहानी-

साथियो, लंबे समय से मैं इंसान का बहुपयोगी दोस्त बनकर रहता आ रहा हूँ। कई लोग मुझे नीम से जोड़कर देखते हैं परंतु वास्तव में मेरा नीम से कोई सम्बंध नहीं है। साथियो में करी पत्ता हूँ। मैं मूल रूप से भारत का देशज पौधा हूँ। मुझे कुछ जगहों पर मीठा नीम और काला नीम नाम से भी जाना जाता है। कुमाऊँनी में मुझे 'गंदेला' नाम से जाना जाता हैं। मैं कृशि योग्य समूह क सगंधीय श्रेणी का पौधा हूँ। मेरा वैज्ञानिक नाम मुरया कोइनिजी है। मेरा वृक्ष छोटे आकार का होता है। जो अधिकतम 4 से 6 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। मैं व्यापक फैलाव वाली प्रजाति का पौधा हूँ। मेरा तना गहरे हरे अथवा भूरे रंग का असंख्य बिंदुओं वाला होता है। मेरे मुख्य तने की परिधि 50 सेमी0 या उससे अधिक हो सकती है।मेरी पत्तियां 8 से 16 सेमी लंबी व 6 से 10 सेमी तक चौड़ी होती है। मेरा पत्रक 30 सेमी तक लंबा और इसमें 24 पत्ते तक होते हैं। अप्रैल माह में मेरे पौधे पर सफेद फूल कीप के आकर के होते हैं जिसमें तीव्र सुगंध होती है। मेरे फूल का व्यास 1 सेमी से अधिक होता है। मेरे पुष्प मई माह से फलों में परिवर्तित हो जाते हैं। मेरे फल लगभग 900 मिलीग्राम तक के वजनी होते हैं जिसका व्यास 1 से 12 सेमी होता है। हरे फलों का आवरण पकने पर लाल हो जाता है, भीतर से फल का छिलका ठोस होता है। हर फल के भीतर बीज होते है। पककर गिरने अथवा पक्षियों के प्रसार के कारण ये दूसरे स्थान पर जम जाते हैं।

यूं तो पूरा भारत मेरा घर है। फिर भी 1200 से 1500 मीटर तक की ऊंचाई वाले स्थानों पर मेरा मनपसंद आवास होता है। मैं रूतासी परिवार का ऐसा पौधा हूँ जिसे उष्णकटिबंधीय व उप उष्णकटिबंधीय जलवायु पसंद आती है। मैं हिमालयी क्षेत्र में आसानी से विकास कर लेता हूँ। मैं भारत में प्रायः द्वीपीय क्षेत्रों में सदाबहार और पर्णपाती वनों के रूप में पाया जाता हूँ। मुझे ऐसे क्षेत्रों में रहना पसंद है जहां पर पूर्ण सूर्य की रोशनी हो, तापमान गर्म हो और मिट्टी छिद्र युक्त अच्छी तरह पानी सोखने वाली हो और पानी का निकास ठीक से हो सके।

मैं मनुष्य के लिए कई प्रकार से उपयोगी हूँ। मेरे वृक्ष का लगभग हर हिस्सा उपयोग में आता है। खान, पान, सुगंध, सौदर्यप्रसाधनों से लेकर औषधीय उपयोग के लिए मेरे वृक्ष के अलग अलग भागों का उपयोग होता है। मेरी सुगंधित पत्तियां मसाले के रूप में दक्षिण भारतीय व्यंजनों में प्रयोग की जाती है। मेरे पेड़ में पाए जाने वाला जिंक, आयरन, कॉपर, एंटी बैक्टिरीयल व एंटी फंगल तत्व मुझे मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक बना देते हैं। मेरी पत्तियां ही नहीं, छाल, रस, बीज आदि का औषधीय उपयोग होता है। मेरे तेल से साबुन बनाया जाता है। पर्यावरण संरक्षण, भू-कटाव आदि में मेरी जड़े अत्यधिक सहायक है। मेरे पौधों को आप बीज से तैयार कर सकते हैं। मैं आपका सच्चा दोस्त हूँ। मेरे पौधों की संख्या बढ़ाकर आप अपने दोस्त बढ़ाईए। मेरे तैयार पके हुए बीजों को थोड़ा सुखाकर जमीन पर रोप दीजिए, और तैयार हो जाएगा सुंदर करी पत्ते का पेड़।

मेरे पौधे में आयरन, जिंक, एंटी डायबिटिक एजेंट, एंटी फंगस, एंटी बैक्टिरीयल, और एंटी इंफ्लेमेंटरी गुण होते हैं। आप मेरा औषधीय उपयोग कर सकते हैं।

डायबटीज होने पर सुबह खाली पेट करी पत्ता खाने से लाभ होता है। डायरिया होने पर छांछ के साथ दो से तीन इसके पत्ते चबाने पर लाभ होता है तथा ये केलेस्ट्रॉल भी नियंत्रित करता है। बालों की समस्या के लिए पत्ती पीसकर लेप बनाकर लगाने से लाभ होता है। नाक और सीने में कफ होने पर एक चम्मच कड़ी पत्ता पाउडर में एक चम्मच शहद मिलाने पर लाभ होता है। कैंसर/बुढ़ापा- यह बुढ़ापा दूर रखने में सहायक है और कैंसर कोशिकाओं को बढ़ने से रोकता है। लीवर- घी के साथ एक कप करी पत्ती का रस और उसमें चीनी और कालीमिर्च मिलकर उबालकर पीने से लीवर को लाभ पहुंचता है। सुबह खाली पेट दो करी पत्ते को खजूर के साथ लेने से खून की कमी नहीं होती है। इसका रस निंबू के साथ लेने से पेट के कीड़ों से निजात मिलती है। भोजन में करी पत्ते का प्रयोग करने अथवा कच्चा चबाने से दिल की बीमारियों से बचाव होता है। यह मोतियाबिंद जैसी बीमारियों को भी कम करता है और आँखों की रोशनी बढ़ाता है। इसकी जड़ को उबालकर पीने से किडनी रोगों से मुक्ति मिलती है। इसे दॉतून के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

हमारा भूगोल– रूद्रप्रयाग

रूद्रप्रयाग

दोस्तो, रूद्रप्रयाग उत्तराखण्ड के गढ़वाल मंडल का एक जाना पहचाना जिला है। रूद्रप्रयाग जिले की सीमाएं उत्तर में उत्तरकाशी व पूर्व में चमोली, दक्षिण में पौड़ी और टिहरी जिलों से मिलती है। चमोली, टिहरी व पौड़ी जिलों के हिस्सों को मिलाकर 16 सितम्बर 1997 को इस नए जिले का गठन किया गया। इसमें चमोली जिले के अगस्तमुनि, और उखीमठ विकासखण्डों का पूरा क्षेत्र और पोखरी तथा कर्णप्रयाग विकासखण्डों को कुछ क्षेत्र तथा टिहरी जिले के जखोली और कीर्ति नगर विकासखण्ड, पौड़ी जिले का खिर्सू विकासखण्ड शामिल किया गया ।

रूद्रप्रयास जिले का कुल क्षेत्रफल 2328 वर्ग किमी है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 236857 है और एक वर्ग किमी में 119 लोग निवास करते हैं। इस जिले में प्रति 1 हजार पुरूषों में 1120 महिलाएं हैं। रूद्रप्रयाग जिला तीन तहसीलों उखीमठ, रूद्रप्रयाग और जखोली में बंटा है। वही यहां विकासखण्ड भी तीन ही हैं।

रूद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ और रूद्रप्रयाग दो विधानसभा सभा क्षेत्र हैं। इस जनपद में 688 गॉव है जिसमें 660 आबाद और 28 गैर आबाद हैं। इस जनपद में 368 ग्राम सभाऐं हैं। प्राकृतिक सौंदर्य, पर्यटक स्थलों और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध इस जिले के दक्षिण में विश्व विख्यात केदारनाथ मंदिर और उत्तर में मद्महे वर, दक्षिणपूर्व में नागराष्ट्र और श्रीनगर पड़ते हैं।

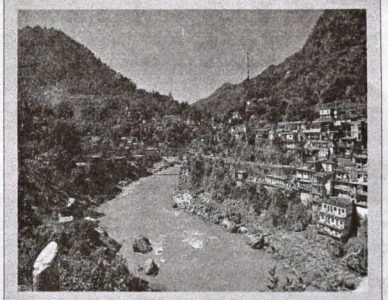

इस जिले का अधिकांश हिस्सा बाह्य हिमालय की दक्षिणी ढलान पर स्थित हैं। अगर हम तापमान की

बात करें तो रूद्रप्रयाग जिले में अधिकतम तापमान 34 डिग्री0 से0 तक जाता हैं वही न्यूनतम तापमान 0 डिग्री से0 तक चला जाता है। जनवरी यहां सर्वाधिक ठण्ड वाला मौसम होता है। वहीं जून-जुलाई में यहां का तापमान सर्वाधिक रहता है। जिले के उच्च भाग बर्फ से ढके रहते हैं तथा भूगोल के अनुसार यहां के विभिन्न क्षेत्रों का तापमान बदलता रहता है। इस जनपद में स्थानीय पर्यटन, कृषि, और फलोत्पादन आय के प्रमुख साधन हैं। यहां वर्षाकाल में 1238 मिली मीटर तक बारिश दर्ज की जाती है।

अलकनंदा और मंदाकिनी रूद्रप्रयाग जिले की प्रमुख नदियां है जो कि केदारनाथ पर्वत श्रृंखलाओं से निकलती है। मंदाकिनी रूद्रप्रयाग में अलकनंदा से मिल जाती है और आगे इसे अलकनंदा के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य छोटी-बड़ी नदियां भी यहां बहती है।

रूद्रप्रयाग जिले में कोई भी नगरपालिका नहीं है अपितु यहां नगर पंचायत और एक नोटिफाईड एरिया है। जिले में लोग कृषि, पशुपालन, सेना व सरकारी रोजगार तथा धार्मिक पर्यटन आदि कामों से अपनी आय अर्जित करते हैं। इसके साथ ही जनपद से बड़ी संख्या में लोग बाहरी जनपदों विशेषकर मैदानी क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में भी जाते हैं। यहां की अधिकांश खेती वर्षा अधारित हैं, कुछ घाटी वाले क्षेत्रों में ही सिंचाई की सुविधा हैं। कृषि उत्पादन की कमी ही इस क्षेत्र में पलायन का कारण हैं।

गेहूँ, धान, जौं, मंडुवा, मादिरा, कौंणी, चौलाई, फाफर, सरसों, की खेती के साथ लोग यहां मसूर, उड़द, तोर, राजमा आदि दालों का भी उत्पादन

करते हैं। मटर, टमाटर, पालक, मूली, प्याज, लहसुन, आलू, आदि यहां के लोगों के सब्जी उत्पादन में शामिल है। सेब, संतरा, अमरूद, नाशपाती, खुबानी, पूलम, कीवी, माल्टा, पपीता, आम आदि के वृक्ष यहां आसानी से उगते हैं और लोग इसका फलोत्पादन करते हैं।

केदारनाथ, मदमहेश्वर, तुंगनाथ, त्रिजुगीनारायण, कोटेश्वर, कालीमठ, चंद्रशिला, जैसे ऐतिहासिक धार्मिक स्थल इसी जनपद में मौजूद हैं। यही कारण है कि यहां पर देश और दुनिया से काफी लोग धार्मिक पर्यटन के लिए आते हैं। यहा जिला पर्यटन की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां पर चोपता, देवरियाताल, वासुकीताल, खिर्सू, रूद्रप्रयाग, अगस्तमुनि, गुप्तकाशी, गौरीकुण्ड, उखीमठ जैस पर्यटन स्थल भी हैं।

जैवविविधता की दृष्टि से भी यह जिला काफी समृद्ध माना जाता है। इसकी गर्म घाटियों में 915 मीटर ऊंचाई तक आम, पीपल, बरगद और शीशम जैसी मैदानी प्रजातियां पाई जाती है। जबकि 1220 मीटर की ऊंचाई तक साल वृक्ष भी देखे जा सकते हैं। अलकनंदा नदी की घाटियों और ढलानों में 1067 मीटर की ऊंचाई तक किचु, बहेड़ा हरड़, कचनार, और ढाक के वृक्ष भी जाए जाते हैं। 1220 मीटर से 1829 मीटर ऊंचाई तक चीड़ व इससे ऊपर बांज व अन्य चौड़े पत्ती वाले वन यहां पाए जाते हैं। 3439 मी0 ऊंचाई में मोरू, तिलौंज, खरसू, जैसे वृक्ष भी यहां उगते हैं। पेंडर या थोड़िया पांगर और चिनार जैसे वृक्ष भी इस ऊंचाई पर मिलते हैं। उच्च हिमालयी जंगलों में फर, सिल्वर फर, कैल, खरसू, देवदार व बांज जैसी प्रजातियां भी पाई जाती है।

वृक्ष रेखा खत्म होने पर अल्पाइन घासों के विशाल मैदान पाए जाते हैं जो अपनी औषधीय वनस्पतियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर उपलब्ध जड़ी बूटियों में राज्य पुष्प ब्रह्मकमल, फेनकमल, नील, कमल, कुटकी, अतीस, हत्याजड़ी, नीली आदि महत्वपूर्ण है।

रूद्रप्रयाग जनपद वन्य जीवों की दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है। यहां वन्य जीवों के संरक्षण के लिए केदारनाथ वन्यजीव अभ्यारण्य भी बनाया गया है। जिले के उत्तरी भाग में स्थित यह अभ्यारण्य 966 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां पर मुख्य रूप से कस्तूरी मृग, हिम तेंदूआ, भूरा हिमालयी भालू, भरल, काला भालू, लोमड़ी, कॉकड़ आदि वन्य जीव पाए जाते है। पंक्षियों में मोनाल, तीतर, चिरतीतर, कोक्लास, चकोर, हिम कबूतर आदि प्रमुख है। जिले में वैसे तो प्रचुर मात्रा में खनिज नहीं है जिससे उद्योग स्थापित हो सके। फिर भी यहां की मिट्टी में एसबेस्टस, मैग्नेसाईट, खड़िया पत्थर, तांबा, लोहा, ग्रेफाइट, जिप्सम, लैड, स्लेट, सल्फर आदि खनिज पाए जाते हैं।

आओ खेलें खेल

मेरा नांम

मित्रो इस बार हम आपको एक रोचक खेलसाथियो, मानसिक अभ्यास से जुड़े खेल हमारे दिमाग के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेरा नाम एक ऐसा खेल है जो समूह में खेला जाता है। यह समूह में हमारी झिझक खत्म करने के साथ ही हमें कुछ रचनात्मक करने की प्रेरणा भी देता है। यह खेल नए समूहों के लिए बेहद उपयोगी है।

इस खेल के लिए सबसे पहली बड़ी जरूरत इस बात की है कि समूह में सभी लोग अनुशासित होकर इसको आगे बढ़ाऐं। इसके लिए हमारे मस्तिष्क का एकाग्र होना जरूरी है और हमारी तुरंत प्रतिक्रिया की भी आवश्यकता होती है।

आवश्यक निर्देश- यह खेल आप सुविधा अनुसार अंदर या बाहर कहीं भी खेल सकते हैं। इस खेल समूह के हर साथी को अपने लिए एक शब्द चुनना होता है। यह शब्द ऐसा हो जो उस व्यक्ति की विशेषता को बताता हो। शब्द के साथ शर्त यह होगी कि वह उस व्यक्ति के नाम से पहले अक्षर से शुरू होना चाहिए। जैसे शुरू करने वाला साथी कह सकता है। साथियो नमस्कार मेरा नाम रेसर राजू है या फिर नमस्कार मेरा नाम बैट्समैन बंटी है।

आओ खेलें- पहला चरण

पहले चरण में सभी साथियों को गोल घेरे में खड़ा कर दें। सभी को खेल के बारे में बताऐं और कोई एक साथी शुरू करे मेरा नाम. फलां है। समूह को निर्देश दें कि सभी लोग हर व्यक्ति का नाम और विशेषण याद रखें और जरूरत पड़ने पर बता सकें। पूरे समूह की बारी आने पर खेल का पहला चरण पूरा होगा।

दूसरा चरण- खेल के दूसरे चरण में भी हमें पुनः गोल घेरा बनाना है । बड़े समूह को आवश्यकतानुसार छोटा बना सकते हैं। एक छोटे समूह में 6 लोग शामिल हो सकें। अब छोटे समूह से ही खेल शुरू करें। हमें करना यह है कि हर साथी को स्वयं से पहले वाले साथी के नाम और विशेषण को याद रखना है और अपने नाम विशेषण से पूर्व बोलना है। जैसे दूसरे नम्बर का साथी पहले साथी के नाम विशेषण के बाद अपना नाम बताएगा।

माना पहले साथी ने कहा मेरा नाम रेसर राजू है तो दूसरा साथी कहेगा रेसर राजू मेरा नाम है। ध्यान रहे खुद से पहले आए सभी नाम और विशेषण के बाद ही अपना नाम और विशेषण बताना है। तो साथियो ये था खेल 'मेरा नाम है' आपको कैसा लगा जरूर बताईएगा।

बातूनी कौआ

एक चौकोर कागज को बर्फी जैसे रखकर उसे आधे से मोड़ो। चित्र (1)। अब नीचे से ऊपर तक आधे में मोड़ो। चित्र (2)। तिकोन बाएं-दाएं सिरों को मध्य-रेखा तक मोड़ो। चित्र (3)। अब नीचे के दोनों हिस्सों को बिन्दुओं वाली लाइन तक मोड़ो। चित्र (3)। अब नीचे के दोनों हिस्सों को बिन्दुओं वाली लाइन तक मोड़ो। चित्र (4)। इस समय आपको मॉडल चित्र (5) जैसा दिखेगा। अब ऊपर के भाग में से अन्दर की तह की खींचकर बाहर निकालो। चित्र (6)। अन्दर की तह को तब तक खींचो चित्र (7) जब तक दोनों तहें एक-दूसरे पर न बैठ जाएं। अब ऊपरी नोक को नीचे तक मोड़कर एक बर्फी जैसी बनाओ। चित्र (8)। ऊपर और नीचे के तिकोनों को आधे में तिरछा मोड़ो। चित्र (9)। तुम्हारा कागज ऐसा दिखेगा। चित्र (10)। कागज को अब पलट दो जिससे निचला हिस्सा ऊपर आ जाए। मॉडल को अब बाएं से दाएं तक मिलाकर आधे में मोड़ो। चित्र (11)। दोनों निकले हुए सिरों को बाईं ओर खींचो। चित्र (12) और दबाकर कौए की चोंच बनाओ। चित्र (13)। कौए के पंख खोलने और बन्द करने से वह बात करेगा। चित्र (14)। कौआ अपनी चोंच से कागज, सुतली और अन्य हल्की चीजें भी उठा सकता है।

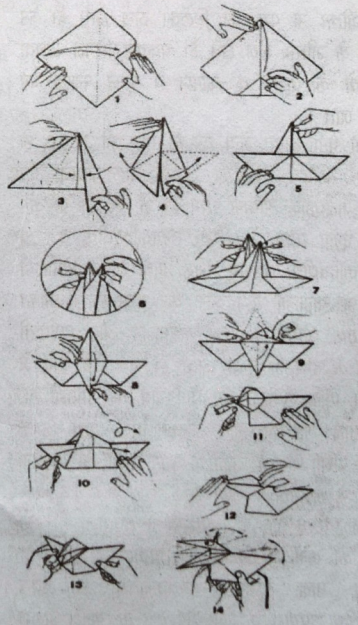

खेती के लिए बड़ा संकट बनती गाजर घास

प्रकृति में वनस्पतियों का अकूत संसार है। अधिकांश वनस्पतियां मानव व पशुजगत के लिए महत्वपूर्ण हैं तो अनेक प्रजातियों को मानव व पशुजगत के विकास में बाधक माना जाता है। हमारी खेती, पर्यावरण, स्वास्थ्य आदि को प्रभावित करने वाले ऐसे अनुपयोगी पौधों को हम खरपतवार के नाम से जानते हैं। देश दुनिया के बीच फैलाव के साथ यह भारत जैसे कृषि प्रधान देशों में भी फैल गए। गाजर घास ऐसी ही एक पौध प्रजाति है जिससे भारत बीते कई सालों से परेशान है। गाजर की तरह दिखने वाले खरपतवार गाजर सिर्फ फसलों के लिए ही नहीं, बल्कि मनुष्यों व जानवरों के लिए भी नुकसानदेह है। शहरों में मुख्यत खुले स्थानों, उद्योग वाले क्षेत्रों, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारों, नालियों व पड़ती भूमि आदि जगहों पर यह बहुतायत मात्रा में पाये, जाते हैं।

अब हालांकि गांवों में भी इसकी बढ़त देखने को मिल रही है। उत्तराखण्ड में भी हम अनेक स्थानों पर इस घास की पौध को देख सकते हैं। यह एकवर्षीय शाकीय पौधा है बहुत तेजी से फैलता है।

पूरे भारतवर्ष में तकरीबन 35 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में फैली हुई इस घास को इसे 'गाजर घास,' कांग्रेस घास या 'चटक चाँदनी', गॉधी बूटी आदि नामों से पुकारा जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस है। हर मौसम में और किसी भी वातावरण में फलने फूलने और उग जाने वाला यह खरपतवार खेती को बड़ी मात्रा में नुकसान पहुंचा रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार एक से डेढ़ मीटर तक लम्बी गाजर घास के पौधे का तना रोयेदार अत्यधिक शाखा वाला होता है। इसकी पत्तियां असामान्य रूप से गाजर की पत्ती की तरह होती हैं। इसके फूलों का रंग सफेद होता है। प्रत्येक पौधा एक से पॉच हजार छोटे बीज पैदा करने की शक्ति रखता है। इसी कारण इसका फैलाव अधिक होता है। यह पौधा 3-4 माह में ही अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है और साल भर उगता रहता है। हमारी फसलों जैसे धान, ज्वार, मक्का, सोयाबीन, मटर तिल, गन्ना, बाजरा, मूंगफली, सब्जियों एवं उद्यान फसलों में भी देखा गया है। इसके बीज अत्यधिक सूक्ष्म होते हैं, जो अपनी दो स्पंजी गद्दियों की मदद से हवा तथा पानी द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से पहुंच जाते हैं। यह वर्तमान में विश्व के सात सर्वाधिक हानिकारक खरपतावार पौधों में से एक है तथा इसे मानव एवं पालतू जानवरों के स्वास्थ्य के साथ-साथ सम्पूर्ण पर्यावरण के लिये अत्यधिक हानिकारक माना जा रहा है।

यह खतरनाक खरपतवार खेती के उत्पादन को 40 प्रति ात तक कम कर रहा है। इसमें पाये जाने वाले एक विषाक्त पदार्थ के कारण फसलों के अंकुरण एवं वृद्धि कम होने लगती है। दलहनी फसलों में यह खतरपतवार जड़ ग्रंथियों के विकास को प्रभावित करता है तथा नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणुओं की क्रियाशीलता को भी कम कर देता है। इसके परागकण बैंगन, मिर्च, टमाटर आदि सब्जियों के पौधे पर एकत्रित होकर उनके परागण अंकुरण एवं फल को प्रभावित करते हैं तथा पत्तियों में क्लोरोफिल की कमी एवं फूलों को प्रभावित करते है इसके परागकण वायु को दूषित करते हैं तथा जड़ो से स्रावित रासायनिक पदार्थ 'इक्यूडेर' धरती की मिट्टी को दूषित करता है। भूमि-प्रदूषण फैलाने वाला यह पौधा उस मिट्टी की सुरक्षा भी नहीं कर पाता है, जहाँ पर यह उगता है, इसीलिए इसकी पहाड़ो में फैलना बहुत ही हानिकारक है, क्योंकि एक तो स्वयं मिट्टी को बांधता नहीं है, दूसरे इसकी उपस्थिति में अन्य पौधे भी नष्ट हो जाते हैं।

गाजर घास अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है। जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जानें की सम्भावना पैदा हो गई है। अनेकों स्थानों पर इसने चरागाहों को पूरी तरह ढक लिया है और खाली पड़े मैदान के मैदान अपने चपेट में ले लिये हैं। यदि यह कहा जाए कि वनस्पति जगत में यह घास एक शोषक के रूप में उभर रही है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। वनस्पति विज्ञान में इस प्रक्रिया को "एलिलोपैथी" के नाम से जाना जाता है।

इस खरपतवार के लगातार आसपास रहने से हमें डरमेटाइटिस, एक्जिमा, एर्लजी, बुखार, दमा आदि की बीमारियां हो जाती हैं। इसकी पत्तियों के काले छोटे-छोटे रोमों में पाया जाने वाला रासायनिक पदार्थ 'पार्थिनम' मनुष्यों में एलर्जी का मुख्य कारण है। दमा, खाँसी, बुखार व त्वचा के रोगों का कारण भी यही पदार्थ है। गाजर घास के परागकण सांस की बीमारी का भी कारण बनते हैं। पशुवैज्ञानिकों के अनुसार पशुओं के लिए भी यह खतरनाक है। इससे उनमें कई प्रकार के रोग हो जाते हैं इसकी हरियाली के प्रति लालायित होकर पशु इसके करीब आते हैं, परन्तु इसकी गंध से निराश होकर लौट जाते हैं। यदा-कदा घास की कमी होने से जो पशु इसे खाते हैं, उनका दूध कड़वा एवं मात्रा में कम हो जाता है। पशुओं द्वारा अधिक मात्रा में इसे चर लेने से उनकी मृत्यु भी हो सकती है।

इस खरपतवार की बीस प्रजातियां पूरे विश्व में पाई जाती हैं। अमेरिका, मैक्सिको, वेस्टइंडीज, भारत, चीन, नेपाल, वियतनाम और आस्ट्रेलिया के विभिन्न भागों में फैली खरपतवार का भारत में प्रवेश तीन दशक पूर्व अमेरिका या कनाडा से आयात किये गये गेहूं के साथ हुआ। कुछ ही समय में ही लगभग 35 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में इसका भीषण प्रकोप हो गया। यह खरपतवार जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, अरुणाचल प्रदेश और नागालैण्ड के विभिन्न भागों में फैली हुई है

इसको रोकना बहुत मुश्किल काम हो चला है। लेकिन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की मदद से इसे बीटल कीट द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। वैज्ञानिकों का मत है कि बीटल कीट अपना जीवनचक्र 25 से 30 दिन में पूरा कर लेता है। जून से अक्टूबर माह में यह अधिक सक्रिय रहता है। यह गाजर घास की पत्तियों को बुरी तरह खा जाता है, जिससे पौधा पत्ती विहीन होकर मर जाता है। बीटल सिर्फ गाजर घास की पत्तियों को ही खाता है। वहीं बीटल से मनुष्यों, पर्यावरण व अन्य फसलों पर कोई बुरा प्रभाव उत्पन्न नहीं होता। इसके आलावा सड़कों, कार्यालयों, फार्म हाउसों आदि के किनारे मेंड़ बनाकर गेंदा को रोपने या उसके बीजों के छिड़काव से अथवा खेतों में अधिक पानी छोड़कर भी इसे नियंत्रित किया जाता है। आने वाले समय में बढ़ती आबादी के साथ अनाज की अधिक जरूर के लिए गाजर घास एक बड़ी समस्या है। माना जा रहा है कि दुनिया में जिस भी देश में यह घास फैली है उसे अभियान चलाकर इसे समाप्त करना होगा। अथवा खरपतवार विज्ञान में और अनुसंधान कर इसके घास के लाभ ढूढकर इसके अन्य उपयोग करने होंगे।

जाने ग्रीन ट्रायब्यूनल को

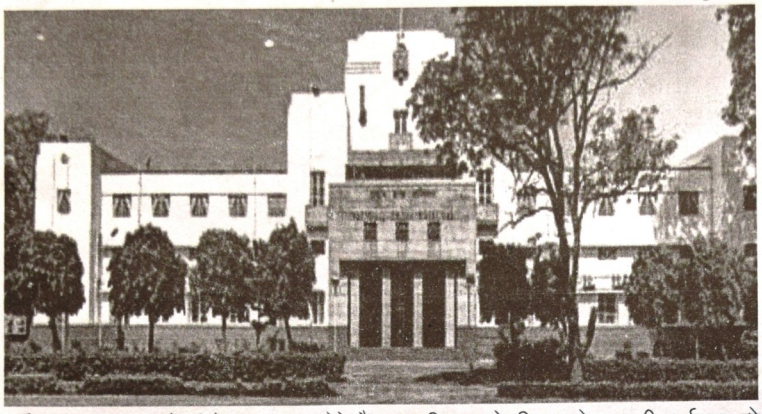

ट्राईब्यूनल एक तरह के विशेष न्यायालय होते हैं जो किसी क्षेत्र विशेष से जुड़े हुए मामलों की सुनवाई कर उस पर निर्णय लेते हैं। ट्राइब्यूनल अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ न्यायाधिकरण है। हमारे देश में जल जंगल जमीन व पर्यावरण और जैवविविधता से जुड़े मामलों की सुनवाई और निपटारे के लिए नेशनल ग्रीन ट्रायब्यूनल हिंदी में राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण की स्थापना 28 अक्टूबर 2010 को की गई। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के बाद भारत दुनिया का तीसरा देश बना जहां पर पर्यावरणीय मामलों के निपटारे के लिए कानून बनाया गया।

इस कानून की पृष्ठभूमि में बढ़ती पर्यावरणीय समस्यायें थी। क्योंकि देश और दुनियां में लगातार पर्यावरणीय संकटों से नई-नई चुनौतियां सामने आ रही थी। इनसे निबटने के लिए कानून बनाने और कानून का उल्लंघन करने पर सजा तय करने की जरूरत महसूस की जाने लगी। देश और दुनिया में पर्यावरण के कानूनों की मांग तेज होने लगी। 1992 में ब्राजील के रियो शहर में सम्पन्न पृथ्वी सम्मेलन इस दिशा में मील का पत्थर माना जाता है। इस सम्मेलन में दुनिया के कई देशों को मानना पड़ा कि विकास का हमारा वर्तमान तरीका पर्यावरण परिस्थितिकी और प्राकृतिक संसाधनों के लिए भारी खतरा है। इसलिए हमको विकास के साथ ही पर्यावरण को भी ध्यान में रखना होगा। इस सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ ने तमाम सदस्य देशों की सरकारों से विकास के अपने तौर तरीकों पर फिर से विचार करने को 9 राष्ट्र ने यह भी कहा कि दुनियां के देशों की सरकारों को प्राकृतिक संसाधनों की अपूर्णीय क्षति और पर्यावरण के विनाश को रोकने के लिए तरीके खोजने होंगे। उनको इसके लिए जरूरी कदम भी उठाने होंगे। इस पृथ्वी सम्मेलन में दुनिया के कई देशों के बीच सहमति बनी कि विकास की योजनाएं इस तरह बनाई जायेंगी कि पर्यावरण और पारिस्थितिकी को नुकसान न पहुंचे। इसके बाद दुनिया के कई देश आगे आए। पर्यावरण केंद्रित सतत विकास की बात होने लगी। इस दिशा में नए नियम कानून बनने शुरू हुए। हमारे देश में भी यह प्रक्रिया आगे बढ़ी। इसका परिणाम राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम के रूप में आया जो 2010 में बना। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय हरित अधिकरण की स्थापना की गई। जिसे संक्षेप में एनजीटी भी कहते हैं। हरित अधिकरण एक ऐसा न्यायालय है जो सिर्फ पर्यावरणीय मामलों की सुनवाई करती है। हरित अधिकरण का उद्देश्य पर्यावरण से जुड़े मामलों की तेजी से सुनवाई और निर्णय करना है। पर्यावरण सम्बंधी कानूनों को लागू करने वाले व्यक्तियों और सम्पत्तियों के नुकसान होने पर सहायता देने क्षतिपूर्ति करने का काम भी भी करता है। एनजीटी एक पर्यावरण न्यायालय के रूप में जल रोक प्रदूशण नियंत्रण, वन संरक्षण, वायु संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता के कानूनों के अंतर्गत आने वाले मामलों को सुनता है। उन पर अपना निर्णय देता है। उदाहरण के लिए मेघालय में अंग्रेजी शासन से शुरू हुई रैट होल माईनिंग पर्यावरण के लिए काफी घातक सिद्ध हो रही थी। जमीन में छोटे-छोटे छेद बनाकर होने वाले इस खनन व्यवसाय में कई बच्चे भी काम करते थे। लोग इस मामले को लेकर एनजीटी गए और एनजीटी ने इसपर रोक लगा दी। दिल्ली में एक धर्म गुरू द्वारा यमुना नदी के तट पर आयोजित एक विशाल कार्यक्रम से यमुना अत्यधिक प्रभावित हुई। एनजीटी ने इसपर करोड़ों का जुर्माना लगाया। यह मामला आज भी चल रहा है पर एनजीटी ने एक रास्ता खोला है कि हम पर्यावरण पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले व्यक्तियों और गतिविधियों के खिलाफ मामला दर्ज करा सकें। कोई भी आम नागरिक यह कर सकता है और पर्यावरण का नुकसान करने वाले से ही इसकी भरपाई कराई जाती है। एनजीटी लगभग 6 माह में इन मामलों को निपटाने का प्रयास करती है। एनजीटी का मुख्यालय जिसे मुख्य बैंच भी कहते हैं, दिल्ली में स्थापित है। पुणे, भोपाल, चेन्नई, कोलकत्ता में भी इसकी शाखाऐं है। सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश को इसका अध्यक्ष बनाया जाता है। इसमें 10 से 20 सदस्य उच्च न्यायालयों के सेवानिवृत्त न्यायाधीश और इतने ही पर्यावरण क्षेत्र से जुड़े सदस्य होते हैं।

एनजीटी एक संवैधानिक संस्था है, जिसके पास कई अधिकार और शक्तियां है जो पर्यावरण संरक्षण के लिए कवच का काम करेंगी। हम सभी का कर्तव्य बनता है कि हम एनजीटी के गठन की मूल भावना और उद्देश्यों को समझे और देश दुनिया में आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित ग्रह बनाने की अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निभाऐं।

मोटू लाल

बोतल लेके निकले गधेने
खाते पीते मोटू लाल
बैठे शौच को एक कोने में
मच्छर निकले कई हजार
मोटू जी फिर घर को आऐं
साथ में अपने मक्खी लाऐं
खाने में फिर बैठी मक्खी
खाने को किया बेकार
उस खाने को बेटा खाऐ
बेटा उनका हुआ बीमार
लाला जी फिर समझ गऐ
यही है खुले में शौच का हाल
फिर लाला जी शौचालय बनवाए
उनका जीवन हुआ खुशहाल
दूसरों को भी वह समझाऐं
अपने घर में शौचालय बनाऐं।

किरन आर्या
कक्षा -11
कोठयूड़ा, चौखुटिया (ग्रीन क्लब)

निकले बाजार

बन-ठन के निकले बाजार
खरीदें बिस्कुट के पैकेट चार
गए पेट में बिस्कुट साने
पैपर सड़क पर ठहाके माने
हम बच्चे मचाएं शोर
कूड़ा फैला चारों ओर
प्लास्टिक फैलाता है प्रदूषण
मिलकर करें इसका निस्तारण
लोगों में जागरूकता लाऐं
पन्नी प्लास्टिक दूर भगाऐं

नाम- कशिश ठम्टा
कक्षा-7
खनीड़ा (ग्रीन क्लाब)

प्लास्टिक कूड़ा

हम सब बच्चे प्लास्टिक हटायें
घर और गॉव को स्वच्छ बनायें
गॉव में फैला कूड़ा हटायें
जैविक अजैविक गड्ढे बनायें
पन्नी प्लास्टिक उसमें जायें
स्वच्छता को हम अपनायें
वायु प्रदूषण को दूर भगायें
लोगों को बीमारी से हम बचायें
लोगों में जागरूकता फैलायें
स्वच्छता को हम अपनायें
यहीं होने देता यह उत्पादन
आओ करें इसका निस्तारण।

बबीता मेहना
कक्षा -9
गॉव -ढनाण (ग्रीन क्लाब)

टीडीएच जर्मनी के माध्यम से तथा आर्थिक सहयोग मंत्रालय जर्मनी के सहयोग से सीमित वितरण हेतु अमन द्वारा प्रकाशित
तथा नवल प्रिंटर्स, अल्मोड़ा से मुद्रित